

चित्र

चित्रव

२।४।६२। कर्वस्तोटालता। जलपिप्पली।
द्वेषपुष्टी। इति राजनिर्वेषः। मङ्गिडा।
इति रक्तमाला। (यथास्याः पर्यायाः।)
“मङ्गिडा विकला जिह्वी काला योजनपर्यंते।
ताम्बली चित्रपर्णी काळीरी रक्तयश्चिका।”
इति वैद्यकरनमालायाम्।)

चित्रपादा, खी, (चित्री पादी यस्याः।) सारिका-
पली। इति हारावली। ८८।

चित्रपिञ्चकः, पुं, (चित्राखि पिञ्चाणि पुञ्च-
कानि यस्य। ततः कप्।) मयूरः। इति
राजनिर्वेषः।

चित्रपुङ्छः, पुं, (चित्रः पुङ्छो यस्य।) शरः। इति
चिकाक्षिरेषः।

चित्रपुष्टी, खी, (चित्राखि पुष्टाणि यस्याः।
क्षिया डौप्।) अबडा। इति राजनिर्वेषः।
(विवरणमनुष्ठान्तेष्या चेष्टम्।)

चित्रपृष्ठः, पुं, (चित्रं नागवर्णं पृष्ठं यस्य।)
कलविहृपश्चौ। इति हारावली। ८८।

चित्रपलः, पुं, (चित्रं पलं फलकं तहाद्वाति-
विद्वतेरस्य। अच्।) मत्स्यविशेषः। चित्र-
पलमत्स्यः। इति भूरिप्रयोगः।

चित्रपला, खी, (चित्राखि पलानि यस्याः।)
चिर्मिटा। गृगेव्वरः। लिङ्गिनी। महेन्द्र-
वारश्चौ। वार्ताकी। कण्ठकारी। इति राज-
निर्वेषः। मत्स्यविशेषः। फलइ इति भाषा।
तत्पर्यायः। राजग्रीवः। २ फलकी ३ महो-
नदः। ४। इति शृङ्खलावली।

चित्रभागुः, पुं, (चित्रानागवर्णा भानवी रसमयो-
यस्य।) अधिः। (यथा, महाभारते। २।११।४२।
“चित्रभागुः सुरेश्वरं अनलस्तं विभासो !”)
खूः। इति मेदिनी। नै, १८३। चित्रकृष्णः।
अर्कवृष्णः। वहिंश्चक इति अर्काह इति
चामरदश्नात्। भेरवः। इति शृङ्खलावली।
(वर्वविशेषः। यथा, द्वृत्संहितायाम्। ४।४५।
“अर्हुं चतुर्थस्य युग्मस्य पूर्वं
यज्ञित्रभावं कथयन्ति वर्षम्।”)

चित्रमेघना, खी, (चित्रं मेघं यस्याः।) काको-
दुम्भिरिका। इति राजनिर्वेषः।

चित्रमेखलः, पुं, (चित्रा चित्रिता मेखला यस्य।)
मयरः। इति चिकाक्षिरेषः।

चित्रयोधी, [न] पुं, अर्जुनश्चिकः। इति राज-
निर्वेषः। (चित्रं यथा स्नात् तथा युध्यतीति।
युध + लिनिः।) पार्यः। (चित्रशुद्धयोधी,
चि। यथा, महाभारते। १।१।१८६।
“यदा द्रोणो विविधानस्तमग्ना-
निर्दर्शन् समरे चित्रयोधी !”)

चित्ररथः, पुं, (चित्रो रथो यस्य।) खूः।
गत्स्वंविशेषः। इति मेदिनी। ये, २८। श्रेष्ठ

पर्यायः। गत्स्वंवराजः। २ अङ्गारपर्यः। ३ कुवेर-
सखः। ४ दधरपर्यः। ५। (यथा, महाभारते। १।
१७१। १७—१८।

गत्स्वंवराजः।

“जितोऽहं पूर्वंकं नाम सुचाम्बङ्गारपर्यताम्।
न च ज्ञाते बलेनाङ्गः। न नामा जनसंसदि।
साच्चिमं लक्ष्माङ्गाम योऽहं दिवास्त्रधारिण्यम्।
गाम्बंगा मायवेच्छामि संयोजयितुमङ्गुणम्।
अच्छामिना चित्रोऽयं द्विषो मे रथ उत्तमः।
सोऽहं चित्ररथो भूला नामा दग्धरपोभवम्।”)
स तु सुनिताम्ब्रां दक्षकथार्यां कम्पपैरसा-
ज्ञातः। इति महाभारते। १।६५।४३।

चित्रलः, पुं, (चित्रमाचर्यं लातीति। ला+कः।)
कर्वरवर्णः। तद्विति चि। इति शृङ्खलावली।
चित्रलता, खी, (चित्रल + “अजादतदाप्।” ४।
१।४। इति टाप्।) गोरक्षोदृष्टः। इति
राजनिर्वेषः।

चित्रलेखा, खी, (चित्रो खेली लेखनशक्तिर्यस्याः।
चित्रं लेखयतीति वा। लिख + “कर्मणयण्।”
३।२।१। इवण्। चित्रलेखनदक्षतयास्या-
स्यात्मम्।) अप्सरोविशेषः। सा ऊधायाः
वस्त्रैः कुमारस्य कथा। यथा, हरिवंशे।
१७४। ७४—७५।

“उदाच उदातीष्व ज्ञामाङ्गतनया सखीम्।
कुशला ते विशालात्मि ! सर्वथा सन्त्विष्यद्वे !
अस्मराचित्रलेखा वै चित्रं चित्रायतां सखि !”)
यथा, श्रीभागवते। १०।६२।१४।

“बायस्य मन्त्री कुमारश्चित्रलेखा च तत्सुता।
सख्यापृष्ठत् सखीमूर्धां कौठूहलसमन्विता।”
(अस्याचित्रलेखनपटुत्वकथा यथा हरिवंशे।
१७४। ८०—८८।

“चित्रलेखाद्वैहोऽक्षयन्तर्वर्णं इर्षयतौ शैनैः।”
“देवदानवथामाणां गन्धवौरंगरक्षसामद्।
ये विशिद्धाः प्रभादेव रूपेणाभिजनेन च।
यथा प्रधानतः सर्वानालिखिव्याप्तं चत्ति !।
मग्नुव्यालोके यै चापि प्रवरा लोकविश्रुताः।
सप्तरचेष्टे ते भीरु ! दर्शयिण्याम्बहुं प्रियम्।
ततो विज्ञाय पट्टस्यं भर्तारं प्रतिलभ्युषे।
सा चित्रलेखया प्रोक्ता कथा हितचिकौर्यथा।
क्रियतामेविभाव्य चित्रलेखां सखीं प्रति।
ततः कुशलहस्तात् यथा लेखनं समन्वतः।
इत्युक्ता सप्तरचेष्टे कला लेखयतास्तु तान्।
चित्रपट्टगतान् सखानानयामात् भोगता।”)
इत्योदिष्टेः। इति द्वृष्टोमङ्गली। अस्य विव-
रणं द्वृष्टेष्वद्वयम्।

चित्रलोचना, खी, (चित्रे लोचने यस्याः।)
वारिकापद्मो। इति जटाधरः भूरिप्रयोगच।
चित्रवदालः, पुं, (चित्रवदु आ च मन्त्रादलति
पर्याप्तोतीति। आ+अल+अच्।) पाटीन-
मत्स्यः। इति जटाधरः।

चित्रवक्षिकः, पुं, (चित्रा विचित्रा वक्षिलता। सा
इव कायतीति। के+कः।) वदालमत्स्यः।
इति देमचकः। ४।३१।

चित्रवली, खी, (चित्रा विचित्रा वली लता
यस्याः।) गृगेव्वरः। महेन्द्रवालशी। इति
राजनिर्वेषः।

चित्रवीर्यः, पुं, (चित्रमाचर्यंजनकं वीर्यमस्य।)
रत्तैरकः। इति राजनिर्वेषः।

चित्रशिखलिङ्गः, पुं, (चित्रशिखलिङ्गोऽङ्गिरसे
सुनेत्रांवते इति। जन+डः।) द्वृष्टप्रतिः।
इवमरः। १।३।२४।

चित्रशिखलिङ्गिप्रसूतः, पुं, (चित्रशिखलिङ्गोऽङ्गि-
रसः प्रसूतः बन्धतिः।) द्वृष्टप्रतिः। इति
हलायुधः।

चित्रशिखलौ, [न] पुं, (चित्रः शिखः शिखा
बद्धयस्य। “अत इनिटनौ।” ५।२।११५।
इति इनिः।) सप्तप्रयः। इवमरः। १।१२५।
यथाह भरतः।

“मरीचिरङ्गिरा अचिः पुलस्यः पुलहः क्रतुः।
वशिष्ठेति सप्तेते श्वेयस्त्रिवशिखलिङ्गः।”
(यथाप, महाभारते। १३।३५।२६—२८।
“ये हि ते ऋब्यः खाताः सप्त चित्रशिखलिङ्गः।
तैरेकमतिभिर्भिला यत् प्रोक्तं श्राव्यस्तुतमम्।
वैश्वतुभिः समितं छतं मेरौ महागिरौ।
आसैः सप्तभिरङ्गीर्ण लोकधर्ममनुभवम्।
मरीचिरङ्गिरसौ पुलस्यः पुलहः क्रतुः।
वशिष्ठेष्व महातेजास्ते हि चित्रशिखलिङ्गः।”)
चित्रसंपर्णः, पुं, (चित्रः नानावर्गरङ्गितः संपर्णः।)
भालुधायस्यः। इति शृङ्खलावली।

चित्रसेनः, पुं, ब्रह्मापादजमसीभारत्याकायस्यस्य चित्र-
गुप्तादित्यतालग्नेतम्भूर्मन्विशेषः। स तु मर्ल-
लोकविदेशकः। यथा,—

“चित्रसेने महाविद्यां वग्बेति गुरोर्नैयन्।
जप्ता सन्तोष्य पुद्वादीन् याचिला प्राप्य मर्लैतः।
रायं चकार द्वृष्टुक्षिचित्राङ्गद अघो गतः।”
इत्याचारनिर्वयतन्मम्।

(चित्रा देना यस्य। गत्स्वंविशेषः। यथा,
महाभारते। २।१०।२५।

“चित्रसेनश्च गीतशस्तथा चित्ररथोऽपि च।
एते चान्ये च गत्स्वं भर्तारं प्रतिलभ्युषे।”
धृतराष्ट्रपुष्टविशेषः। यथा, महाभारते। १।
४५।५७। “तैर्णा धृतराष्ट्रस्य पुत्राणां चत्वारः;
प्रधाना वभूदः। द्वृष्टेष्वनी द्वृशासनो विकर्ण-
श्चित्रसेनश्चेति।” पूर्ववंशीयस्य परिचितः पुत्रा-
णामन्यतमः। यथा, महाभारते। १।४।४५।५२।

“परिचितोऽभवन् पुत्राः सर्वे धर्मार्थकोविदाः।
कथसेनोग्नेन च चित्रसेनश्च वीर्यवान्।”
श्वरादसुरस्य पुत्रविशेषः। यथा, हरिवंशे।
१६१। ४३।

“चित्रसेनोग्नेन चित्रक्सेनजितक्षया।”
नरिष्यन्नपुत्रः। यथा, भागवते। ४।२।१६।

“चित्रसेनो नरिष्यन्नात् दक्षस्य सुतोभवत्।”)